

# UGC NET Paper 1 2018 July

## www.Fillerform.info

---

### Previous Years Solved Questions - UGC NET Paper 1 for July 2018

### Unit 3(Home work)Hindi/Eng-08 with Ans

---

Read the passage carefully and answer question numbers from 46 to 50

Climate change is considered to be one of the most serious threats to sustainable development, with adverse impacts on the environment, human health, food security, economic activity, natural resources and physical infrastructure. Global climate varies naturally. According to the Intergovernmental Panel on Climate Change (IPCC), the effects of climate change have already been observed, and scientific findings indicate that precautionary and prompt action is necessary. Vulnerability to climate change is not just a function of geography or dependence on natural resources; it also has social, economic and political dimensions which influence how climate change affects different groups. Poor people rarely have insurance to cover loss of property due to natural calamities i.e. drought, floods, super cyclones etc. The poor communities are already struggling to cope with the existing challenges of poverty and climate variability and climate change could push many beyond their ability to cope or even survive. It is vital that these communities are helped to adapt to the changing dynamics of nature. Adaptation is a process through which societies make themselves better able to cope with an uncertain future. Adapting to climate change entails taking the right measures to reduce the negative effect of climate change (or exploit the positive ones) by making the appropriate adjustments and changes. These range from technological options such as increased sea defences or – flood - proof houses on stilts-to behavioural change at the individual level, such as reducing water use in times of drought. Other strategies include early warning systems for extreme events, better water management, improved risk management, various insurance options and biodiversity conservation. Because of the speed at which climate change is happening due to global temperature rise, it is urgent that the vulnerability of developing countries to climate change is reduced and their capacity to adapt is increased and national adaptation plans are implemented, Adapting, to climate change will entail adjustments and changes at every level from community to national and international. Communities must build their resilience, including adopting appropriate technologies while making the most of traditional knowledge, and diversifying their livelihoods to cope with current and future climate stress. Local coping strategies and knowledge need to be used in synergy with government and local interventions. The need of adaptation interventions depends on national circumstances. There is a large body of knowledge and experience within local

communities on coping with climatic variability and extreme weather events. Local communities have always aimed to adapt to variations in their climate. To do so, they have made preparations based on their resources and their knowledge accumulated through experience of past weather patterns. This includes times when they have also been forced to react to and recover from extreme events, such as floods, drought and hurricanes. Local coping strategies are an important element of planning for adaptation. Climate change is leading communities to experience climatic extremes more frequently, as well as new climate conditions and extremes. Traditional knowledge can help to provide efficient, appropriate and time – tested ways of advising and enabling adaptation to climate change in communities who are feeling the effects of climate changes due to global warming.

-  
46. To address the challenge of climate change developing countries urgently requires:

(1) Implementation of natural adaptation policy at their level

(2) Adoption of short term plans

(3) Adoption of technological solutions

(4) Imposition of climate change tax

**Answer:**

-  
47. Given below are the factors of vulnerability of poor people to climate changes. Select the correct that contains the correct answer.

(a) Their dependence on natural resources

(b) Geographical attributes

(c) Lack of financial resources

(d) Lack of traditional knowledge

Code:

(1) (b), (c) and (d)

(2) (a), (b), (c) and (d)

(3) (c) only

(4) (a), (b) and (c)

**Answer:**

-

48. Adaption as a process enables societies to cope with:

(a) An uncertain future

(b) Adjustments and changes

(C) Negative impact of climate change

(d) Positive impact of climate change

Select the most appropriate answer from the following code:

(1) (a) and (c)

(2) (b), (c) and (d)

(3) (c) only

(4) (a), (b), (c) and (d)

**Answer:**

-

49. The main focus of the passage is on:

(1) Co-ordination between regional and national efforts

(2) Adaptation to climate change

(3) Social dimensions of climate change

(4) Combining traditional knowledge with appropriate technology

**Answer:**

-

50. The traditional knowledge should be used through

(1) Improvement in national circumstances

(2) Synergy between government and local interventions

(3) Modern technology

(4) Its dissemination

**Answer:**

पास को ध्यान से पढ़ें और प्रश्न संख्याओं का उत्तर 46 से 50 तक दें

जलवायु परिवर्तन को स्थायी विकास के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक माना जाता है, जिसका पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक गतिविधि, प्राकृतिक संसाधनों और भौतिक बुनियादी ढांचे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वैश्विक जलवायु प्राकृतिक रूप से बदलती है। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पहले ही देखे जा चुके हैं, और वैज्ञानिक निष्कर्ष बताते हैं कि एहतियाती और त्वरित कार्रवाई आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन की भेद्यता केवल भूगोल या प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता का कार्य नहीं है; इसमें सामाजिक भी है। अर्थ, आर्थिक और राजनीतिक आयाम जो प्रभावित करते हैं कि जलवायु परिवर्तन विभिन्न समूहों को कैसे प्रभावित करता है। गरीब लोगों के पास शायद ही कभी प्राकृतिक आपदाओं अर्थात् सूखे, बाढ़, सुपर चक्रवात आदि के कारण संपत्ति के नुकसान को कवर करने के लिए बीमा होता है। गरीब समुदाय पहले से ही गरीबी और जलवायु परिवर्तनशीलता की मौजूदा चुनौतियों का सामना करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और जलवायु परिवर्तन कई लोगों को उनकी क्षमता से परे धकेल सकता है। सामना करना या जीवित रहना। यह महत्वपूर्ण है कि इन समुदायों को प्रकृति की बदलती गतिशीलता के अनुकूल बनाने में मदद की जाए। अनुकूलन एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज अपने आप को अनिश्चित भविष्य का सामना करने में सक्षम बनाता है। जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने से जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभाव को कम करने के लिए (या सकारात्मक लोगों का शोषण) उचित समायोजन और परिवर्तन करके, सही उपाय करने की आवश्यकता होती है। ये तकनीकी विकल्पों से लेकर जैसे कि समुद्री सुरक्षा में वृद्धि या बाढ़ - व्यक्तिगत स्तर पर स्टिल्ट्स-व्यवहार परिवर्तन पर प्रूफ हाउस, जैसे कि टी में पानी के उपयोग को कम करना। सूखे की मार। अन्य रणनीतियों में चरम घटनाओं के लिए प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, बेहतर जल प्रबंधन, बेहतर जोखिम प्रबंधन, विभिन्न बीमा विकल्प और जैव विविधता संरक्षण शामिल हैं। वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण जलवायु परिवर्तन जिस गति से हो रहा है, उसकी वजह से यह जरूरी है कि विकासशील देशों की जलवायु परिवर्तन की संभावना कम हो और उनकी अनुकूलन करने की क्षमता में वृद्धि हो और राष्ट्रीय अनुकूलन की योजनाएं लागू हों, जिससे जलवायु परिवर्तन हो। सामुदायिक और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हर स्तर

पर समायोजन और परिवर्तन। समुदायों को अपना लचीलापन बनाना चाहिए, जिसमें पारंपरिक ज्ञान का अधिकतम उपयोग करते हुए उपयुक्त तकनीकों को अपनाना और वर्तमान और भविष्य के जलवायु तनाव से निपटने के लिए अपनी आजीविका में विविधता लाना शामिल है। स्थानीय मैथुन रणनीतियों और ज्ञान का उपयोग सरकार और स्थानीय हस्तक्षेपों के तालमेल में किया जाना चाहिए। अनुकूलन हस्तक्षेप की आवश्यकता राष्ट्रीय परिस्थितियों पर निर्भर करती है। जलवायु परिवर्तन और चरम मौसम की घटनाओं के साथ स्थानीय समुदायों के भीतर ज्ञान और अनुभव का एक बड़ा निकाय है। स्थानीय समुदायों ने हमेशा अपने जलवायु में बदलाव के अनुकूल होने का लक्ष्य रखा है। ऐसा करने के लिए, उन्होंने अपने संसाधनों और अपने ज्ञान के आधार पर तैयारी की है जो पिछले मौसम के पैटर्न के अनुभव के माध्यम से संचित है। इसमें टी शामिल है। जब वे भी बाढ़, सूखा और तूफान जैसी चरम घटनाओं से प्रतिक्रिया करने और उबरने के लिए मजबूर हो जाते हैं। स्थानीय मैथुन रणनीतियाँ अनुकूलन के लिए नियोजन का एक महत्वपूर्ण तत्व हैं। जलवायु परिवर्तन प्रमुख समुदायों को जलवायु संबंधी चरम सीमाओं के साथ-साथ नए जलवायु परिस्थितियों और चरम सीमाओं का अनुभव करने के लिए अग्रणी है। पारंपरिक ज्ञान, कुशल, उचित और समय प्रदान करने में मदद कर सकता है - वैश्विक तापन के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को महसूस कर रहे समुदायों में जलवायु परिवर्तन के लिए अनुकूलन और सलाह देने के तरीकों की जांच की जा सकती है।

46. जलवायु परिवर्तन विकासशील देशों की चुनौती का तत्काल समाधान करने की आवश्यकता है:

- (1) उनके स्तर पर प्राकृतिक अनुकूलन नीति का कार्यान्वयन
- (2) अल्पकालिक योजनाओं को अपनाना
- (3) तकनीकी समाधानों को अपनाना
- (4) जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

उत्तर:

47. नीचे दिए गए जलवायु परिवर्तन के लिए गरीब लोगों की भेद्यता के कारक हैं। सही उत्तर का चयन करें।

- (a) प्राकृतिक संसाधनों पर उनकी निर्भरता
- (b) भौगोलिक विशेषताएँ
- (c) वित्तीय संसाधनों की कमी

(d) पारंपरिक ज्ञान का अभाव

कोड:

(1) (बी), (सी) और (डी)

(2) (ए), (बी), (सी) और (डी)

(3) (ग) ही

(4) (ए), (बी) और (सी)

उत्तर: \_

48. एक प्रक्रिया के रूप में अनुकूलन समाजों को सामना करने में सक्षम बनाता है:

(ए) अनिश्चित भविष्य

(b) समायोजन और परिवर्तन

(C) जलवायु परिवर्तन का नकारात्मक प्रभाव

(d) जलवायु परिवर्तन का सकारात्मक प्रभाव

निम्नलिखित कोड से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:

(1) (ए) और (सी)

(2) (बी), (सी) और (डी)

(3) (ग) ही

(4) (ए), (बी), (सी) और (डी)

उत्तर: \_

49. मार्ग का मुख्य फोकस इस पर है:

(1) क्षेत्रीय और राष्ट्रीय प्रयासों के बीच समन्वय

(2) जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन

(3) जलवायु परिवर्तन के सामाजिक आयाम

(4) पारंपरिक ज्ञान को उपयुक्त तकनीक के साथ जोड़ना

उत्तर: \_

50. पारंपरिक ज्ञान का उपयोग किया जाना चाहिए

(१) राष्ट्रीय परिस्थितियों में सुधार

(२) सरकार और स्थानीय हस्तक्षेपों के बीच का तालमेल

(३) आधुनिक तकनीक

(४) इसका प्रसार

**उत्तर:** \_